

वन एवं पर्यावरण मंत्रालय अधिसूचना D. G.S.R./711(E) ऑदनांक 4 अगस्त, 1992 भाग तीन: खंड चार (जी) के द्वारा मंदित शिष्टेय के अंतर्गत के उच्च शासन एनान् एनयम बनाता है, वृत्त मंत्री (संरक्षण) अधिनियम 1972 (D. 53 वर्ष 1972) का धारा 63 उपधारा (1) के खंड (एफ) एवं पशुवाटिका का माप्यता एनयम, 1992

धारा 1 संवृत्त नाम व लागू होने का अर्थ: (1) ये एनयम “पशुवाटिका का माप्यता एनयम 1992” कहलाएंगे। (2) ये एनयम “इनके राजपट्ट मन्त्रिकाशत होने का अर्थ से लागू होने। नोट: ये एनयम भारत शासन राजपट्ट (असाधारण) भाग II खंड 3(1) ऑदनांक 4-8-92 को पृष्ठ 8 से 13 पर मन्त्रिकाशत हुए अतः एनयम लागू होने का अर्थ 4-8-92 हुई। धारा 2.

परभाषाएं - इस एनयम मन्त्र जब तक कोई बात एनयम या संदर्भ के अपरगत न हो: (ए) ‘अधिनियम’ : से तात्पर्य ‘वृत्त मंत्री’ (संरक्षण) अधिनियम 1972 (D. 53 वर्ष 1972) से है। (बी) ‘बाड़ा’ (Enclosure) से तात्पर्य पशुवाटिका के मन्त्राण्य के रहवास के लिये मंदित स्थान से है। (सी) ‘कटघरा अवरोध (Enclosure barrier)’ से तात्पर्य है वह वास्तविक अवरोध जो बाड़े के अंदर एक पशु के रहने के

(डी) ‘समाविष्ट के खतरे वाल मन्त्रजातियां (Endangered Species)’ से तात्पर्य है वह मन्त्रजातियां जो अधिनियम का सूची मन्त्रासमलत है। (डीडी) ‘अंतर्संकटापन मन्त्रजात’ से बाघ, एशियाई शेर और पैथर से भवन ऐसी संकटापन मन्त्रजात अभिहित है जिनका देश मन्त्र कुल संख्या सभी चण्डयाघर मन्त्र कुल मलाकर 200 से अधिक नहं है। (ई) ‘फाम’ : से तात्पर्य इन एनयम का परशरट (A) मन्त्रादये फाम से है। (एफ) ‘मंदशन का उद्देश्य’ (Performing purpose) से तात्पर्य है वह काय जो पशुओं को अभिक्कृतक, काय करने को बाध्य करे जिसमन्त्र सरकस के करतब भी सन्त्रमलत है। (एफ-एफ) ‘बचाव के उद्देश्य’ से अभिहित इस अधिनियम का अनुसूच्य मन्त्रावन्त्रादय पशुओं का देखभाल के लिये स्थापित के उद्देश्य, जो लोग के मंदशन के लिये नहं खुले है।’ (जी) ‘दशक को दूर रखने हेतु अवरोध (Stand of Barrier)’ से तात्पर्य है वह अवरोध जो कटघरा अवरोध के बाहर से दूर लगा वास्तविक अवरोध: (एच) ‘पशुवाटिका संचालक (Zoo operators)’ से तात्पर्य है वह मन्त्रित जो पशुवाटिका के मन्त्राकलाप पर अंतर्तम एनयंण रखता हो, परंतु लये बना हो।

1. वन एवं पर्यावरण मंत्रालय - अ.ड./सा.का.एन./186(अ) ऑद. 8-2-04 द्वारा (डी.डी.) जोड़ी गई। 2. पर्या. एवं वन मंत्रालय अ.ड./सा. का.एन./186 (अ) ऑद. 6-2-04 भारत का राज. (असां) भाग-2 खण्ड 3(1) ऑद. 9-2-04 पृ. 1-7 पर मन्त्रिकाशत से ‘एक-एक’ जोड़ा गया।

I

I

.

I

.

सदस्य को पशुवाटिका संचालक माना जावेगा।

का मन्त्राश हो, तथा कान्नी को पशुवाटिका के मन्त्राकलाप का उत्तरदायी हो, को पशुवाटिका का संचालक माना जावेगा।

कसी साझे का संस्था (Firm) या एकल मन्त्रित का संघ (Association) के सन्त्रावन्त्र मन्त्र कोई एक भागीदार या कसी कान्नी के सन्त्रावन्त्र मन्त्र उसके संचालक, मन्त्रवस्थापक, (Manager) सचव या अन्त्र अधिकार मन्त्र पशुवाटिका

(3) माप्यता हेतु आवेदन: धारा 38(H) के अंतर्गत पशुवाटिका का माप्यता हेतु आवेदन फाम ‘A’ मन्त्र के उद्देश्य पशुवाटिका मन्त्राधिकरण को ऑदया जावेगा। (4) आवेदन फास (अ) मन्त्रयेक आवेदन के लये, जो एनयम का धारा (3) के अंतर्गत मन्त्रित कया जावेगा, मन्त्रये पांच सौ फास के षप मन्त्र जमा कये जावगे। (ब) फास का राश मन्त्राड णाईट या पोहल आडर के द्वारा जमा का जावेगी जो के उद्देश्य पशुवाटिका मन्त्राधिकरण को देय हो। (5) आवेदन के साथ मन्त्रित होने वाले अभिलेख तथा चवरण जो ऑदया जाना चाओह: मन्त्रयेक आवेदन के साथ एनधापरत फास का राश का णाईट या पोहल आडर लगाया जावेगा तथा फाम ‘A’ मन्त्र द8 गई बात का मन्त्रट चवरण ऑदया जावेगा। (6) जांच करने तथा सूचना मंगाने का शिष्टेय: कसी पशुवाटिका को अधिनियम का धारा 38(H) के अंतर्गत माप्यता देने के पूव, मन्त्राधिकरण, पशुवाटिका द्वारा फाम ‘A’ मन्त्र द8 गई जानकारी के सन्त्रावन्त्र मन्त्र ऐसी जांच कर सकता है जो आवमयक समझे और अंतर्तरित जानकारी भी मांग सकता है। (7) माप्यता मन्त्रादय करने का शत: कसी भी पशुवाटिका को माप्यता एनान् शत पर द8 जावेगी, यथा : (ए) जब तक मन्त्राई षप से माप्यता न द8 गई हो, माप्यता ऐसी अवध के लये, जो एक वर्ष से कम हो, और जो माप्यता पट्ट मन्त्र दशाई गई हो, के लये होगी। (बी) यह क पशुवाटिका, ऐसे मानक (Norms) एवं मापदंड (Standard) जो अधिनियम या इन एनयम मन्त्रावन्त्रापरत है, या जो इनके अंतर्गत लागू कये जावगे, का पालन करेगी। (8) माप्यता नवीकरण: (अ) माप्यता मन्त्रित पशुवाटिका, जो माप्यता नवीनीकरण चाहती है, माप्यता का अवध का समाविष्ट के तीन माह पूव, फाम ‘A’ मन्त्र के उद्देश्य पशुवाटिका मन्त्राधिकरण को आवेदन देगी। (ब) माप्यता के नवीकरण मन्त्रावन्त्र 3, एनयम 4, एनयम 5, एनयम 6 और एनयम 7, उसी प्रकार लागू होग, जैसे माप्यता मन्त्रादय करते समय लागू होते है। केवल नवीकरण के समय फास का राश, दो सौ मन्त्रये देय होगी। (9) पशुवाटिका का वगकरण: पशुवाटिका का माप्यता हेतु मानक एवं मापदंड एनधापरत करने,

तथा उनके द्वारा किये कार्य का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से, पशुवाटिका को उसके क्षेत्रफल, पशु संख्या, पशुओं का भोजन तथा दशक का संख्या के आधार पर नीचे दिये अनुसार चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

III. उस पशुवाटिका के संबंध में, जो केवल शासन, राज्य शासन या स्थानीय प्राधिकरण का हो, या जिस पर इनका नियंत्रण हो, वह श्रेणी जिसको केवल शासन, राज्य शासन या प्राधिकरण ने पशुवाटिका के कार्यसंपादन हेतु नियुक्त किया हो, को पशुवाटिका संचालक माना जावेगा।

पशुवाटिका का श्रेणी	बड़ी	मध्यम	छोटी	लघु
1. पशुवाटिका का क्षेत्रफल (हेक्टर) में	75 ह. स अधिक	50-75 ह.	20-50 ह.	20 ह. स कम
2. निदशत होन वाल पशुओं का संख्या	750 स अधिक	500-750	200-499	200 तक
3. पशुओं का भोजन	75 स अधिक	50-75	20-49	20 तक
4. समानित क खतर वाल भोजन तथा का संख्या	15 स अधिक	10-15	5-9	5 स कम
5. दशक का संख्या (वाषक)	7.5 लाख स अधिक	5-7.5	2-5 लाख	2 लाख स कम

(10) माप्यता निदाय करने हेतु धारा 38H के अंतर्गत, निसम मान (Norm) एवं मापदंड (Standard) : केवल पशुवाटिका प्राधिकरण, पशुवाटिका को पशुओं का सुरक्षा और संरक्षण के उद्देश्य तथा अयमानक, मापदंड और अय बातों को, जो नीचे दई हयान में रखकर माप्यता देगा, यथा:

सामान्य

- (1) कसी चडयाघर के संचालन का निमुख उद्देश्य वय जीव का संरक्षण करना होगा और कोई चडयाघर कसीसे
- (2) कोई भी पशुवाटिका, इस अधनयम या अनयम का उलंघन कर कोई पशु निंत नहं करेगी। (3) कोई भी चडयाघर, कसी भी पशु के निंत/पशुओं के निंत करता अनवारण अधनयम, 1960 (1960 का 59) के अधीन निंत ढूरता नहं होने देगा। (3ख) ऐसी निजातय से संबंधत पशुओं को, निनके करत ढदखाने पर पशुओं के निंत ढूरता अनवारण अधनयम, 1960 (1960 का 59) के अधीन पाबंद लगा दई है, एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहं ले जाया जाएगा:

रखे जा सका गे। (4) कोई भी पशुवाटिका, कसी पशु को, मैदान में हाथी और पहाड़ी क्षेत्र में सुरागाय को छोड़कर, सवार ढोने या वाहन खींचने के कार्य में नहं लेगी। (5) कोई भी पशुवाटिका, कसी पशु को जंजीर से बांधकर या दांत अनकाल कर नहं रखेगी जब तक क ऐसा करना उनके लये ढहतकर न हो। (6) कोई भी पशुवाटिका, कसी गंभीर ढप से बीमार, चोट खाया, या दुबाल पशु का निदशन नहं करेगी। (7) निंयक पशुवाटिका, सताह में कम से कम एक ढदन, दशक के लए ढुंद रहेगी। (8) निंयक पशुवाटिका का पारध दवार से ढघर रहेगी निनका ऊंचाई जमीन तल से कम से कम दो मीटर होगी। वतमान में उपलब्ध पशुवाटिकाएं, जो सफार (Safari) या ढहरण उडयान (Deer Park) के ढप में हई, उनमें चैन से जुड़ी उचत डजाइन एवं नाप का फेसिंग (बागड) बनी रहेगी। (9)

पशुवाटिका के संचालक, पशुवाटिका का वातावरण वृद्ध लाकर, चारु और हरयाल कर तथा उसमें घास का मैदान या पुष्प वाटिका लाकर वृद्ध एवं वृद्ध रखेगा। (10) कसी भी पशुवाटिका में भवन का क्षेत्रफल पशुवाटिका के क्षेत्रफल का 25% से अधिक नहं होगा। भवन के क्षेत्र में निशासक भवन, भंडार गृह, रेक्टराट (Kiosks), दशायाध के आराम गाह, अपताल, पशुघर और पकका सड़क सिमलत है। (11) निंयक चडयाघर, चडयाघर में रखे गये पशुओं के लए भूम, पानी, ढबजल और क्षेत्र का वातावरणीय िथत को यान में रखते हुए, एक संरक्षण योजना तैयार करेगा और चडयाघर में निदशन करेगा। (11ख) बचाव केवल, मुंय वयजीव वाडान को सूचत रखते हुए, उनके पास लाए वय पशुओं को वीकार कर सकेगा। ढयाकलाप का अनुदा नहं देगा, जो वय पशुओं के कायण से असंगत है।

परंतु ऐसे पशु स्थायी ढप से उपयुक्त आवास सुबधा सढहत सक। सडुवारा उनके पसंद के कसी स्थान पर निशासक एवं कमचारय का ढपरेखा

- (12) निंयक पशुवाटिका में एक पूणकालक निभार अधकार होना चाढहये और उसको उचत निशासक एवं बंतीय शिंतया निदान का जाना चाढहये, जो पशुवाटिका के उचत रख-रखाव और पशुओं का देख-रेख के लये आवक है। (13) निंयक बड़ी एवं मयम पशुवाटिका में, कम से कम एक पूणकालक डयूरेटर (अजायब घर का रक) होना चाढहये, जो पशुओं का देख-रेख, और कटघर के रख-रखाव का पूण ढप से उतरदायी हो।
- (14) निंयक बड़ी पशुवाटिका में कम से कम दो पूणकालक पशु चकसक तथा मयम एवं छोटी पशुवाटिका में एक पशु चकसक पूणकालक ढप में होना चाढहये। लघु पशुवाटिका में कसी बाहर चकसक से निंत ढदन पशुओं का देखरेख कायव तथा होना चाढहये। (14क) निंयक चडया घर में अनन अहतावाले पशुचकसक हगे -

के ंकय चडयाघर िाधकरण द्वारा मायता िात कसी चडयाघर मायूनतम 5 वर्ष का काय अनुभव भी हो और राय पशुचकसा पारषद या भारतीय पशुचकसा पारषद से सयकतः रिजलकृत होना चाहए।

वग

मयम चडयाघर छोटे चडयाघर ियैठ पशु चकसक के पास बी.वी.एस सी और ए एच कयूनतम शैक अहाता या समतुय हो औरवशाल चडयाघर ियैठ पशु चकसक कउनठ पशु चकसक

1
1

1. वन एवं पयावरण मणालय - अ.ड./G.S.R./186(अ) ँद. 6.2.04 से 'II-क' तथा 'II-ख' जोड़े गये। 2. पया. एवं वन मणालय अध. ड. सा. का ँन./106 (अ) ँद. 6.2.04 भा. के राजपट्ट (असा.) भाग 2 (खंड 3) (1) ँद. 9.2.04 पृ. 1-7 पर िकाशत

पशु चकसा पारषद या भारतीय पशु चकसा पारषद से सयकतः रिजलकृत होना चाहए। वववधालय से चडयाघर और वयजीव रोग िबंधन या वयजीव रोग एवं िबंधन मा माटर डी हो और राय कउनठ पशुचकसक के पास बी. वी. एस सी और ए एच कयूनतम शैक अहाता हो और मायता िात पशुओं के कटघरे, उनका रचना, नाप एवं अय आवयक बशटताएं

(15) पशुवाटका मा समत पशुओं के कटघरे इस िकार बनने चाहये िजससे पशु, पशुरक और दशक क सुरा सुनिचत रहे। दशक को पशुओं से उचत दूर पर रखने के लए पशुओं के कटघरे से दूर दशक के खड़े रहने के बेरयर तथा चेतावनी के बोड लगे रहने चाहये। (16) कसी चडयाघर मा सभी पशुबाड़े इस िकार से डजाइन कए जायगे ताक उनके भीतर रखे गए पशुओं का सभी जीव अपेएं पूण हो जाएं। बाड़े ऐसे आकार के हगे ताक यह सुनिचत कया जा सके क पशु अपने वछंद बचरण और अयास के लए थान पा सक। झुंड मा रहने वाले पशुओं पर कसी बशट पशु का अधपय न बन सके। ऐसी िजातय क दशा मा िजुहा आचरण या जैवक कारण से समूह मा न रखा जा सके, ियैक पशु के लए पृथक-पृथक बाड़ का उपबंध कया जाएगा। बाड़े इन ँनयम के पारशट-2 मा ँदए गये आयाम से छोटे नहं हगे। ये आयाम सक स पर लागू नहं हगे।

(17) पशु वाटका संचालक को पशुओं के बाड़े मा, पशुओं के िाकृत ँनवास का थित, कृष्टम ँप से यथा-संभव ँनमत करना चाहये। पशुओं के लये छाया हेतु उचत िजात के वृ लगाना चाहये तथा ऐसे शरण थल का ँनमाण करना चाहये जो बाड़े के पयावणीय आवरण मा घुल मल जावे। जहां तक तकनीक ँप से संभव हो, बाहर अवरोध खाई खोदर ँनमत करना चाहये। (18) चकडयाघर मा, ियैक तनपायी को खाने का यवथा, खलाने के क/बांम क या डाल मा, का जाएगी। खाना खलाने के क/या डाल का संया और आकार भी ऐसा होगा िजससे क शितशाल पशु, अय पशुओं को पयात खाना खाने से वंचत न कर सक। संकटापुन तनपायी िजातय के लए इन ँनयम के पारशट-1 मा यथाबुनदलट आयाम के पृथक-पृथक खाना खलाने के क का यवथा का जाएगी। ियैक क/कोठर मा (19) ियैक कटघरे/कोठर से अतारत जल, मल-मूह तथा अवशेष जल का ँनकासी का यवथा होना चाहये। तथाप, जब वे अभवहन मा न हो, सक स पशुओं के बचरण और अयास के लए थान का उपबंध करगे।

(20) समाित के खतरे वाल िजातय के लये बनने वाले नये कटघर का आकृत (Design) को के ंकय पशुवाटका िाधकरण का सलाह के उपरात ह ितम ँप देना चाहए।

1. पया. एवं वन मणालय अध. ड. सा. का. ँन./106 (अ) ँद. 6.2.04 भा. के राजपट्ट (असा.) भाग 2 (खंड 3) (1) ँद. 9.2.04 पृ. 1-7 पर िकाशत। 2. वन पया. तथा वन सा. का. ँन. 106 (अ) ँद. 6.2.04 से चडयाघर का मायता (संशोधन) ँनयम 2004 िकाशत हुए। उसके द्वारा यह संशोधन हुआ है।

(21) ियैक पशुवाटका को, ियैक पशु को वाेय कर (Shole some), अपमाण रहत (Un adulterated) उसका आवयकतानुसार पयात माा मा, समय पर भोजन ँदया जाना सुनिचत करना चाहए। कसी भी पशु के आहार मा पौलकता का कमी नहं आना चाहये। (22) ियैक पशुवाटका मा कचरे के ँनवतन हेतु उचत यवथा होनी चाहये, िजससे पशुवाटका मा उपुन ठोस एवं तरल कचरे का सह िकार से ँनवतन हो। (23) ियैक पशु के कटघरे से, अवशेष भोजन, वतुएं, पशुओं के मलमूह एवं अय कचरे का ितुदन सफाई का जाना चाहए और उसको इस िकार नट करना चाहए जो पशुवाटका का सामाय सफाई के अनुप हो। (24) पशुवाटका संचालक को पशुओं के वास थान मा पीने यैय पानी का 24 घंटे यवथा रखना चाहये। (25) पशुओं के ियैक वास थान मा अधिकृत पशु चकसक के ँनदशानुसार काटानाशक औषध का ँछड़काव करना चाहए।

पशुओं का देख-भाल, उनका वाेय एवं इलाज

(26) ियैक पशु का देख-रेख उस पशु के लये िशत एवं अनुभवी कमचार द्वारा का जाना चाहये। ऐसे ियास करना चाहए िजससे पशु को कोई असुबधा या यवहार के कारण तनाव या शर को कोई हाउन न पहुंचे। (27) पशुवाटका के ियैक पशु के वाेय का जांच ितुदन उनका सुरा हेतु ँनयुत कमचार द्वारा का जाना चाहये। यद कोई पशु बीमार, घायल या अनावयक तनाव से त हो तो इसका रपोट, पशु चकसक का, तकाल इलाज करने हेतु, करना चाहये। (28) पशुओं का ँनयमत ँप से जांच, परजीवी (Parasite) जीवाणु का जांच सहत,

कड़ा जाना चाँहये तथा पशु चक्रसक द्वारा ँनणत अवरोधासक दवाएं तथा इंजेक्शन समय-समय पर देने चाँहये।(29) पशुवाँटका संचालक को, पशुओं कड़ा देख-रेख करने वाले कमचारक के वाँटका परकण कम से कम छः माह माँ एक बार अवश्य कराना चाँहये, जिससे यह ँनिकृत कया जा सके क वे कसी संक्रामक बीमारस से पीड़ित नहँ हँ, जो पशुवाँटका के पशुओं पर कड़ाण फैला सक।(30) ँयेक पशुवाँटका माँ, ऐसे समेत पशुओं कड़ा, ँजनको पशुवाँटका ँाधकरण ने समाँत के खतरे वाला माना है, पशु इँतहास (Animal History) और उनके इलाज का काड। (Treatment Card) रखा जाना चाँहये।

पशु चक्रसा कड़ा सुबधाएं

सुबधाएं, औषधय; कड़ायापक रँज और पशु वाँटका देखभाल तथा रखरखाव संबंधी संदभ। पुँतकालय होगा। ँयेक पशुचक्रसा यूँनट माँ आने वाले पशुओं और बीमार पशुओं कड़ा देखभाल करने के लए अलग तथा संगरोध वाड। हँगे जिससे क अँय पशुओं माँ फैलने वाले संक्रमण के अवसर को, यूनीकृत कया जा सके।(31) ँयेक बशाल और मँयम चडयाघर के पास पूणबकसत पशुचक्रसा यूँनट होगी जिसमाँ आधारत मैदाँनक

1. वन पया। तथा वन सा. का. ँन. 106 (अ) ँद. 6.2.04 से चडयाघर कड़ा माँयता (संशोधन) ँनयम 2004 ँकाशत हुँ। उसके द्वारा यह संशोधन हुआ है।

(32) ँयेक चडयाघर माँ वँय पशुओं को ँनयिँत और उनकड़ा देखरेख करने के लए सुबधाएं होगी।(33) ँजन छोटे और बड़े चडयाघर; माँ पूणबकसत, पशु चक्रसा यूँनट उपलब्ध नहँ है, उनमाँ चडयाघर के पारसर;माँ कम से कम एक उपचार क होगा जहां पशुओं कड़ा नैमित्तक जांच कड़ा जा सके और तँकाल उपचार कया जा सके। खँड (34) के थान पर, ँनलखत खँड रखा जाएगा, अथात्: (34) ऐसा कोई पशु, जिसकड़ा चडयाघर माँ मँयु हो जाती है तो उसकड़ा राँय पशु चक्रसा पारषद या भारतीय पशु

अभलखत कए जाएंगे और ँजिँह कम से कम छह वष। कड़ा अवध के लए रखा जाएगा।(35) ँयेक पशु वाँटका माँ एक ँमशान होना चाँहये जहां मृत पशु का शव गाड़ा जावे तथा जिससे पशुवाँटका के अँय पशुओं पर कोई ँभाव न पड़े तथा पशुवाँटका का पयावरण दूषत न हो। बड़ी एवं मँयम पशुवाँटका माँ पशुओं के शव एवं अँय पशुओं के ँनवतान हेतु इँसीनेटर (Incinerator) कड़ायवथा होनी चाँहये।(36) ँयेक पशुवाँटका, से पशुओं कड़ा, जो उस पशुवाँटका के लये केँय पशुवाँटका ँाधकरण द्वारा वीकृत कये गये हँ, बँदगृह माँ ँजनन (Captive breeding) का कायडम बनावेगी। वे इस सँबँध माँ पशुवाँटका ँाधकरण के ँनदश एवं मागदशान का पालन करँगे।(37) कसी पशु को, साथी के बनना एक वष। से अनधक कड़ा अवध के लए तब तक नहँ रखा जाएगा जब तक क ऐसा करने के लए बधमाँय कारण न हँ; या पशु ने अपनी चरमावथा पहले हँ पार कर लँ हो और ँजनन ँयोजन के लए उपयोगी नहँ रह गया हो। चडयाघर के इस अवध के भीतर कसी अकेले पशु के लए साथी दूँदने माँ असफल रहने कड़ा दशा माँ पशु को केँय चडयाघर ँाधकरण के ँनदश के अनुसार कसी अँय थान पर भेज ँदया जाएगा।(38) कसी भी पशुवाँटका को, कसी ँजाँत के एक हँ पशु को ँाँत करने कड़ा अनुमँत नहँ दँ जावेगी, जब तक क ऐसा करना उस पशुवाँटका माँ ँथत कसी एकाकड़ा पशु के लये साथी कड़ा आवकता कड़ा पूँत करता हो या बँदगृह माँ ँजनन के लये वंश बदलने के लए आवक हो।(39) ँयेक चडयाघर राँय के मुँय वँयजीवन संरक के परामश। से केँय चडयाघर ँाधकरण द्वारा अनुमँदत संकटापँन ँजाँतय के योजनाबँ ँजनन कायडम माँ भाग लँगे। इस ँयोजन के लए वे केँय ँदान करँगे।

चक्रसा पारषद से रिजँकृत कसी पशु चक्रसक द्वारा बँतृत पोँटमाट।म कया जाएगा और इसके ँनकष। चडयाघर ँाधकरण के ँनदश के अनुसार ँजनन उधार, उपहार आँद के ँप माँ चडयाघर के बीच पशुओं का आदन

1. वन पया। तथा वन सा. का. ँन. 106 (अ) ँद. 6.2.04 से चडयाघर कड़ा माँयता (संशोधन) ँनयम 2004 ँकाशत हुँ। उसके द्वारा यह संशोधन हुआ है। 2. पयावरण तथा वन मँगल्य-अध. ड. G.S.R./106 अ/ ँद. 6.2.04 द्वारा धारा 39 संशोधत

(40) ँयेक पशुवाँटका, अधक बाँचे देने वाला ँजाँत कड़ा संँया माँ वृ पर ँनयँण के लये, जनसँँया ँनयँण के उचत उपाय, जैसे नर-मादा को अलग-अलग रखना, ँनकँटन (Sterization),..... (Tubectomy) फूस का ँबछौना लगाना, ... (Vasectomy) आँद उपयोग माँ लाना चाँहये।(41) कोई भी पशुवाँटका, पशुओं कड़ावभँन ँजाँतय या उसी ँजाँत के अँय वंश; माँ संकर ँजनन (Hybridization) कड़ा अनुमँत नहँ देगी।

अभलेख रखना, तथा सँपित सूची का केँय पशुवाँटका ँाधकरण को ँेतुतीकरण

(42) ँयेक पशुवाँटका, पशुओं कड़ा जँम से ँाँत, बँय, अँय बवरण, एवं मँयु का लेखा रखेगी। ँयेक पशुवाँटका, उसमाँ ँदनांक 31 माच। को रखे गये पशुओं कड़ा सूची उसी वग। कड़ा 30 अँल तक केँय पशुवाँटका ँाधकरण को भेजेगी।(43) ँयेक पशुवाँटका ँयेक बँतीय वष। माँ पशुवाँटका माँ मृत पशुओं का संँत बवरण तथा पोँटमाट।म कँरपोट। एवं अँय परकँओं के आधार पर मँयु के कारण कँरपोट।, अगले बँतीय वष। के 30 अँल तक केँय पशुवाँटका ँाधकरण को ँेतुत करेगी।(44) ँयेक पशुवाँटका, ँयेक बँतीय वष। माँ, उसके द्वारा कये गये ँयाकलाप; का वाष।क ँँतवेदन ँकाशत करेगा। उस वाष।क

मौतवेदन का मौत बचती वष का समाप्ति के पश्चात्, दो माह के अंदर, केपुष्टय पशुवाटिका मालिकों को
मौत करेगी। इस मौतवेदन का मौत जनसाधारण को भी उचित मूल्य पर उपलब्ध कराना चाहिये।

शर्तों और अनुसंधान

(45) पशुवाटिका मालिकों के पशु के कटघरे पर एक बोर्ड लगाना चाहिए जिसमें उस पशु के संबंध में मालिकों के वैधानिक जानकारी दी गई हो। (46) मालिकों के पशुवाटिका पत्र, संघों के वरग (Brouchers) मागदशक पुस्तिका, आदि मालिकों को करावेगी और उसको मुक्त माल या उचित मूल्य पर दशक को उपलब्ध करावेगी। (47) मालिकों की बड़ी एवं मूल्यमय पशुवाटिका को, पशुवाटिका माल रखे गये पशुओं के शारंगिक व्यवहार, जनसंख्या का गणना, मूलभूत आंकड़ों के आधार पर वृत्त रेखा का जा सके। इन मूलभूत आंकड़ों का अंग पशुवाटिकाएं तथा केपुष्टय पशुवाटिका मालिकों को आदान-प्रदान किया जाना चाहिये। चक्र-सकय सावधानियों के लेख आदि केपुष्टय पशुवाटिका मालिकों के पुनर्देश के अनुसार रखना चाहिये ताकि इन

दशक का सुवधा

(48) पशुवाटिका संचालक को, दशक के लिये पशुवाटिका माल सुवधाजनक स्थान पर आवश्यक सुवधाएं जैसे स्थानागार, आरामगाह, पीने के पानी का व्यवस्था रखना चाहिये। (49) मालिकों के पशुवाटिका माल, मालिकों के चक्र-सा जहर बरोधी दवा सरलता आदि से उपलब्ध होना चाहिये। (50) शारंगिक रूप से अम दशक, तथा ऐसे दशक जो अहल चेर माल हो, को भी देखने का व्यवस्था होनी चाहिये।

योजना एवं बकास

(51) मालिकों के पशुवाटिका को अपने विकास के लिये दशकालिक योजना बनाना चाहिये। मालिकों के पशुवाटिका का एक संबंध योजना भी बनानी चाहिये जिसमें अगले छः वर्षों में होने वाले गणतंत्रधियां एवं विकास कार्य का वरग होना चाहिये। इस योजना का एक मौत केपुष्टय पशुवाटिका मालिकों को भी भेजी जाना चाहिये। 10 क. सकल स और बचाव केपुष्टय का दश मालिकों में 10 का लागू होना - (1) पुन्य 10 के (17), (46), (47) और (51) के उपबंध लागू नहों होंगे। (2) पुन्य 10 के अधीन बचाव केपुष्टय के लिए मायता देने का दश माल, खंड (10), (38), (46) और (51) के उपबंध लागू नहों होंगे।

फाम

मौत,

हम - (पशुवाटिका का नाम) का वृत्त मालिकों (संरक्षण) अधिनियम का धारा 38 H के अंतर्गत मायता मौत करना चाहते हैं। केपुष्टय पशुवाटिका मालिकों के नाम से रुपये 500/- (रुपये पांच सौ) का बक टाईट/पोटल आडार संलक्षण है।

(1) पशुवाटिका का नाम (2) पशुवाटिका का
स्थिति तथा फल (3) स्थापना का तिथि
..... (4) पुनर्गण अधिकार/चालक का नाम
..... (5) गत तीन वर्षों में पशुवाटिका माल आये
दशक का संख्या (वर्ष वार) (1) (2)
..... (3)

सदस्य सचिव, केपुष्टय पशुवाटिका मालिकों (भारत), नई

देहली

..... के संबंध में माल आवश्यक जानकारी पुनर्गणानुसार है: (पशुवाटिका का नाम)

(6) एक वर्ष में दशक के लिए कतने ठोदस पशुवाटिका खुल रही है।

(7) पशुओं का संख्या जो पशुवाटिका मालिकों को दी जाती है।

न.मालिकों के संख्या जो गत वर्ष के अंत में पैदा हुए मौत मृत्यु अंग आवेदन का

	मालिकों को दी जाती है।	उनका संख्या				पुनर्गण	मौत का स्थिति
(1)	हस्त पायी						
(2)	पट्टी						
(3)	रगन वाल जंतु						

1. पशुवर्ग तथा वन मालिकों-अध. D. G.S.R./106 अ/अ. 6.2.04 द्वारा धारा 10 'क' जोड़ी गई।

(4) जल तथा थल पर चलनेवाले जंतु (5) मछली एवं अंग (6) ठोद रग वाले जंतु (8) कटघर का कुल संख्या:

(9) गत तीन वर्ष। म॥ समाप्ति के खरते वाल॥ म॥जापतय; के म॥जनन क॥ सूची(10) पशु चक्र॥सीय सुबधाएं: (i) खुला खाई यु॥त कटघरा(ii) ब॥द पंजरे/प॥ी शाला

(a) ए॥या पूण। कालक पशु चक्र॥सालय है या नह॥

(11) ए॥या पशुवा॥टका म॥पुन॥न सुबधाएं उपल॥ध ह॥:

(12) ए॥वा॥य सुर॥ा एवं रोग पुन॥यु॥ण:

(13) दश।क; क॥ सुबधाएं:

(14) दश।क; क॥ सुर॥ाके उपाय:

(15) पशुवा॥टका का गत तीन वर्ष। का आय-॥यय प॥क

(16) वाष।क म॥पुतवेदन, माग।दश।क पु॥ितका, आ॥द अ॥य म॥काशन;

क॥म॥पुतयां ए॥या:

(b) पशु चक्र॥सालय म॥ उपल॥ध सुबधाएं: (i)

आपरेशन थयेटर/सिज।कल क॥(ii) ए॥स-रे क॥ सुबधा(iii) सुकड़ने

वाले पंजरे(iv) भरती मर॥ज; का क॥(v) सं॥ामक रोगय; का क॥(vi)

औषधालय(vii) पशुओं के शशुओं को पालने हेतु शशुशाला(viii)

पेथालाजिकल लेबोरेटर॥(ix) ए॥त॥ध करने का य॥ व दवाय॥

(i) रसोई घर(ii) भोजन का भंडार गृह(iii) रे॥जरेटर(iv) पीने यो॥य जल क॥यव॥था(v) भोजन के बतरण हेतु गाड़ी/र॥शा आ॥द

(i) ए॥या पशुओं के पीने के ल॥ म॥दूषण र॥हत पानी उपल॥ध है(ii) ए॥या कटघर; से पानी के पुन॥कास क॥ उचत ॥यव॥था है(iii) ए॥या कचरे के म॥पुत॥दन पुन॥वत॥न क॥यव॥था है (iv) ए॥या अ॥न॥टकार॥ क॥ट (Pest) तथा (Predators) के पुन॥यु॥ण क॥यव॥था है(v) ए॥या रोग पुन॥वारक उपाय, जैसे क॥ड़े पुन॥कालना, ट॥के लगाना आ॥द क॥ये जाते ह॥?

(a) ए॥या जनसुबधाएं जैसे ए॥नानागार/शौचालय आ॥द उपल॥ध ह॥? (b) ए॥या पीने के पानी के काफ॥ मा॥ा म॥ नल लगे ह॥(c) ए॥या दश।क; के ल॥ये उचत दूर॥ पर शरण ॥थल उपल॥ध है(d) ए॥या दश।क; के ल॥ये सूचना के॥ग तथा म॥कृ॥त क॥य॥या करने के के॥ग क॥यव॥था है।(e) ए॥या पशुवा॥टका स॥ब॥धी म॥श॥ण क॥यव॥था है।(f) ए॥या साव।ज॥नक दूरभाष के॥ग उपल॥ध है।(g) ए॥या पशुवा॥टका के जलपान गृह एवं (Kiosk) क॥ सुबधा है।

(a) कटघर; के चार; ओर, म॥भावी, खड़े रहने के ल॥ अवरोध लगे ह॥? (b) ए॥या चेतावनी के सूचना फलक यथे॥ट सं॥या म॥ लगे ह॥।(c) ए॥या म॥ाथमक चक्र॥सा क॥ सुबधा उपल॥ध है।

आय अनुदान कुल ॥यय

(17) पशुवा॥टका के भ॥य के बकास क॥ योजना (म॥पुतल॥ संल॥न है)

Appendix –I

ब॥द॥, मह॥वपूण, ए॥तन पा॥ी म॥जापतय; के भोजन/आरामगृह कटघर; का पुन॥तम माप

Family Name of spp	कटघर; क॥ ल॥बाई x	
	म॥जापुत का नाम	चौड़ाई x ऊँचाई
Family Felidae.	शर व चीता (Lion : Tiger) ते॥दुआ (Panther) ते॥दुआ (Cluded & Snow leopard) छोट॥ब॥ल॥(Small Cat)	2.75x1.80x3.00 2.00x1.50x2.00 2.00x1.50x1.50 1.80x1.50x1.50
Elephantidae	हाथी (Elephant)	1.80x1.50x1.50
Rhinocerotidae	एक सग भारतीय गडा	8.99x6.00x5.50
Cervidae	Brow antered deer	3.00x2.00x2.50
Boridae	Hangul Swamp deer Musk	3.00x2.00x2.50
	deer Mouse deer	3.00x2.00x2.50
	नीलगर॥ थार Nilgiri Thar	2.50x1.50x2.00
		1.50x1.00x1.50 2.50x1.50x2.00

	चौसंगा (Four Horned antelope) जंगल भारतीय बायसनसुरागाय (Yak) मारखोर (Bharat Goral) Wildsheep & Markhor) चकारा	2.50x1.50x2.00 2.50x1.50x2.00 3.00x1.50x2.00 3.00x2.00x2.50 4.00x2.00x2.50
Equidae	जंगल गधा (Wild Ass)	4.00x2.00x2.50
Ursidae	भारतीय रछ समेत मजात (Indian bear)	2.50x1.80x2.00
Canidae	गीदड़, भडया, जंगल कत	2.00x1.50x1.50
Vivirri dae	Palm Civet Large Indian Civel & Binturang	2.00x1.00x1.00 2.00x1.50x1.00
Mustalli dae	Otters (All type) Ratel/Hogilad ger Martem	2.50x1.50x1.00 2.50x1.50x1.00 2.00x1.50x1.00
Pracyonidae	Red Panda	3.00x1.50x1.00
Lorisidae	Snow Loris & Slender loris	1.00x1.00x1.50
Cercopithecidae	बंदर व लगर	2.00x1.50x1.00

